साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 05
May 2017

कम से कम बोलिए ज्यादा से ज्यादा समझिये

अरुण कुमार शर्मा

मैं नहीं जनता राजनीती
पर एक बात कहूँ निति की
रखिये याद हरदम
बोलिए बहुत कम
यह बात है उत्तम
निति है सर्वोतम
क्योंकि कम बोलने से
चुपचाप रहने से
बात से विवाद नहीं होता
विवाद से झगड़ा- फसाद नहीं होता
कोई बोलता है ज्यादा बोलने से
आदमी बन जाता है उत्तम
टी हम कहते है कम बोलने से
आदमी बन जाता है सर्वोत्तम
कम बोलने का मतलब
हमेशा बंद नहीं रखिये लब
बोलिए वही बात जो जरुरी हो
बात जो प्यारी हो
कम बोलने से आदमी बनता गंभीर
और वही होता सच्चा अमीर
क्योंकि वही हो सकता है धीर
कलयुग में धीर ही होंगे वीर
जीत उन्ही की होगी
जिनके साथ शांति और उन्नति होगी
और शांति मिलेगी कब

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 05
May 2017

कम बोलेंगे आप जब
कम बोलेन के फायदें अनेक
अनेक फायदों में फायदा एक
कम बोलेंगे जब आप
या चुप रहेंगे आप
सब समझेंगें आपकों विद्वान्
समझेंगे आपके पास है ज्ञान
आप है गंभीर
सब रहेंगे आपसे दूर
भले ही आप बेवकूफ
या उल्लू चपत तक
चुप रहिये न कहिये उफ़
सब समझेंगे आपको चालक
ऐसी बात नहीं है
कौन कहता ये सही है?
कि कम बोलने वाले बेवकूफ होते है
कम बातें बोने वाला ही चलाक हो
अच्छी बातें पहले बोलिए
अपने अनुभव का मिशल दीजिये
गलत बात न बोलिए
पहले जरा सोचिये
क्या इससे आपका हित होने वाला है?
इससे सुनने वाले का क्या हनी होने वाला है?
आपका लाभ महत्वपूर्ण है
या दुसमन का हानी सम्पूर्ण है
खाइये विचार का चूर्ण
बोलिए विचारपूर्ण
कम से कम बोलिए
ज्यादा से ज्यादा समझिये
बात को बात की तरह कीजिये
बात का न बतंगर बनाया कीजिये

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 05
May 2017

बस इतना कीजिये
बात ऐसा न बोलिए
कि किसी का दिल टूट जाये
किसी की जिंदगी लुट जाये
बात में मिठास हो
प्यार की तलाश हो
जिन्दगी का न हास हो
न किसी का मन उदास हो
बस एक आस हो
बात दिल को पास लाये
जीवन सुखमय हो जाये
...